जीवन रक्षक आकस्मिक प्रबंधन से आप क्या समझते हैं ?

पहले से तैयार ऐसा प्रबंधन जिसके माध्यम से किसी आपदा से पीड़ित व्यक्ति या व्यक्तिओं के समूह की तुरंत मदद की जा सके, या उनका उपचार किया जा सके,जीवन रक्षक आकस्मिक प्रबंधन कहलाता है।

बाढ़ की स्थिति में अपनाये जाने वाले आकस्मिक प्रबंधन का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

बाढ़ के आते ही जान-माल और मवेशी पर भारी संकट आ जाता है। इसलिए गांव के बाहर तटबंध की ऊंची भूमि, गांव के छत वाले ऊंचे मकान या कोई भी सार्वजनिक निर्मित बाढ़ मुक्त क्षेत्र पर मवेशियों तथा घर के सामानों और लोगों को पहुंचाना पहली प्राथमिकता होती है। सुरक्षित स्थान पर पहुंचने के बाद भोजन और पेयजल की व्यवस्था आवश्यक है। बच्चों के लिए दूध की व्यवस्था, महामारी से बचने के लिए गर्म जल, गर्म भोजन तथा छोटे से जगह में मिलजुल कर रहने के लिए वातावरण बनाना आकस्मिक प्रबंधन का हिस्सा है।

भूकंप एवं सुनामी की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन की चर्चा संक्षेप में कीजिए।

भूकंप एवं सुनामी की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन का तीन प्रमुख कार्य होता है –

• बचे हुए विस्थापित लोगों को राहत कैंप में ले जाना और उसे सभी प्रकार की आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराना।

• गुम हुए लोगो की तलाश में मदद करना और वैसे लोगों को मलबे से निकालना जो अभी भी दबे हुए हैं।

• अकाल मृत्यु प्राप्त आम लोगों को और जानवरों को सही स्थानों पर दफनाकर महामारी फैलने से रोकना।

आकस्मिक प्रबंधन में स्थानीय प्रशासन की भूमिका का वर्णन कीजिए।

आकस्मिक प्रबंधन में स्थानीय प्रशासन की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके लिए आवश्यक है कि वे राहत शिविर का निर्माण करें। वहाँ सभी उपकरण और प्राथमिक उपचार की सामग्रियाँ उपलब्ध करायें तथा एंबुलेंस, डॉक्टर, अग्निशामक इत्यादि की व्यवस्था में तत्परता दिखायें। वें कागजी दाव पेंच में न पड़कर राहत राशि और राहत सामग्री को आमजन तक पहुँचाकर आपदा प्रबंधन को सरल तथा सहज बना सकते हैं।

आग लगने की स्थिति में क्या प्रबंधन करना चाहिए ? उल्लेख करें।

आग लगने की स्थिति में प्रबंधक की तीन बड़ी जिम्मेदारी होती है -

• आग में फंसे हुए लोगों को बाहर निकालना।

• घायलों को तत्काल प्राथमिक उपचार देकर अस्पताल पहुंचाना। प्राथमिक उपचार में ठंडा पानी डालना, बर्फ से सहलाना और बरनोल जैसी प्राथमिक औषधि का उपयोग करना। इससे जलन में राहत होती है।

• आग के फैलाव को रोकना, जिसके लिए नजदीक में उपलब्ध बालू, मिट्टी, अगर तालाब हो तो तालाब के जल का उपयोग, तथा अग्निशामक दल को बुलाना अतिआवश्यक होता है।

जीवनरक्षक आकस्मिक प्रबंधन से आप क्या समझते हैं ?

पहले से तैयार ऐसा प्रबंधन जिसके माध्यम से किसी आपदा से पीड़ित व्यक्ति या व्यक्तिओं के समूह की त्वरित मदद की जा सके, या उनका उपचार किया जा सके, जीवन रक्षक आकस्मिक प्रबंधन कहलाता है।

• **बाढ़ की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन -** बाढ़ के आते ही जान-माल और मवेशी पर भारी संकट आ जाता है। इसलिए गांव के बाहर तटबंध की ऊंची भूमि, गांव के छत वाले ऊंचे मकान या कोई भी सार्वजनिक निर्मित बाढ़ मुक्त क्षेत्र पर मवेशियों तथा घर के सामानों और लोगों को पहुंचाना पहली प्राथमिकता होती है। सुरक्षित स्थान पर पहुंचने के बाद भोजन और पेयजल की व्यवस्था आवश्यक है। बच्चों के लिए दूध की व्यवस्था, महामारी से बचने के लिए गर्म जल, गर्म भोजन तथा छोटे से जगह में मिलजुल कर रहने के लिए वातावरण बनाना आकस्मिक प्रबंधन का हिस्सा है।

• **भूकंप की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन -** भूकंप के बाद बचे हुए लोगों को राहत कैंप में ले जाया जाए, मलबे में दबे लोगों को निकाला जाएं।

• **आग लगने की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन -** आग लगने की स्थिति में आग में फंसे हुए लोगों को बाहर निकालना पहला कार्य होना चाहिये, उसके बाद घायलों को तत्काल प्राथमिक उपचार देकर अस्पताल पहुंचाना तथा प्राथमिक उपचार में ठंडा पानी डालना, बर्फ से सहलाना और बरनोल जैसी प्राथमिक औषधि का उपयोग करना आवश्यक होता है।

आकस्मिक प्रबंधन में स्थानीय प्रशासन एवं स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

• **स्थानीय प्रशासन की भूमिका -** आकस्मिक प्रबंधन में स्थानीय प्रशासन की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके लिए आवश्यक है कि वे राहत शिविर का निर्माण करें। वहाँ सभी उपकरण और प्राथमिक उपचार की सामग्रियाँ उपलब्ध करायें तथा एंबुलेंस, डॉक्टर, अग्निशामक इत्यादि की व्यवस्था में तत्परता दिखायें। वें कागजी दाव पेंच में न पड़कर राहत राशि और राहत सामग्री को आमजन तक पहुँचाकर आपदा प्रबंधन को सरल तथा सहज बना सकते हैं।

• **स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका -** आपदा प्रबंधन को दिनचर्या का एक अंग समझना आवश्यक है। स्वयंसेवी संस्था, गांव के युवकों तथा पंचायत प्रबंधन के बीच समन्वय आवश्यक है, तभी आकस्मिक प्रबंधन सफल हो सकता है। ऐसे प्रबंधन में जाति धर्म और लिंग का कोई महत्व नहीं है। मिलजुल कर आपदा से लड़ने का संदेश देना आवश्यक है। इस प्रकार का संदेश विद्यालय के बच्चों को भी देने की जरूरत है। यह कार्य भी स्वयंसेवी संस्थाएं कर सकती हैं।